तेजी के दौरान नीति
(Policy During Boom)

तेजी में अपनाए जाने वाले उपाय वस्तुओं और सेवा की माँग कम करने के लिए सरकार गैर विकास क्रियाओं पर अनावश्यक व्यय की कटौती कर देती है इससे निजी व्यय पर भी रोक लगती है जो वस्तुओं और सेवाओं के लिए सरकारी माँग पर निर्भर करती है। लेकिन सरकारी व्यय में कटौती करना कठिन है। फिर आवश्यक और अनावश्यक सरकारी व्यय में भेद करना संभव नहीं है। इसलिए इस उपाय को कराधान द्वारा संपूरित किया जाता है। व्यक्तिगत व्यय को कम करने के लिए सरकार व्यक्तिगत कंपनी और केन्द्र करों की दरों को बढ़ाती है। जब सरकारी व्यय से आय अधिक होती है तो सरकार आधिक्य बजट की नीति अपनाती है। ऐसा था तो

The difference between failure and success is doing a thing nearly right and doing a thing exactly right

कर देते बढ़ाकर या सरकारी व्यय कम करके या दोनों द्वारा किया जाता है। ये गुणक की विपरीत प्रक्रिया द्वारा आय और समस्त मांग को कम कर देते हैं।

एक अन्य राजकोषीय नीति जो प्रायः अपनायी जाती है, वह जनता से अधिक उधार लेना है, जिसका प्रभाव जनता के पास मुद्रा की मांग कम करना है। फिर सार्वजनिक ऋण का पुनर्भुगतान बंद कर देना चाहिए और जब अर्थव्यवस्था स्थिर हो जाए तो किसी भविष्य की तिथि तक भुगतान स्थगित कर देना चाहिए।

मंदी के दौरान नीति
(Policy During Depression)

मंदी के दौरान सरकार सार्वजनिक व्यय में वृद्धि और करों में कटौती करती है तथा घाटे के (बजट) बजट की

नीति अपनाती है। ये उपाय समग्र माँग, उत्पादन, आय, रोजगार और कीमतों को बढ़ाते हैं। बजट घाटे का वित्त प्रबंध करने के लिए सरकार द्वारा उधार लेना, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के पास निक्षेप, पड़ी हुई मुद्रा, जिसका योजनाओं में प्रयोग हो जाता है।

निष्कर्ष

(Conclusion)

प्रति-चक्रीय राजकोषीय नीति की प्रभावशीलता नीति कार्य के सही समय पर लागू करने और सार्वजनिक निर्माण कार्यों की प्रकृति मात्रा और आयोजन पर निर्भर करती है।